सेमेस्टर II

हिन्दी शिक्षण '7 A'

Unit II: भाषिक योग्यताओं का विकास

1. श्रव्य - दृश्य एवं मौखिक अभिव्यक्ति कौशल का विकास

a. भाषायी कौशलों का विकास

b. भाषायी कौशलों का महत्व

c. भाषा के कौशल

d. श्रवण उद्देश्य एवं अपेक्षित व्यवहारगत परिवर्तन

e. श्रवण कौशल के लिए श्रव्य सामग्री का प्रयोग

f. भाषायी कौशल - उच्चारण या बोलने का कौशल

g. मौखिक अभिव्यक्ति की आवश्यकता

2. पठन - योग्यता का विकास

a. पठन एवं वाचन शिक्षण कौशल

b. विद्यालय में हिन्दी शिक्षक द्वारा सस्वर वाचन एवं मौन-वाचन के अवसर

c. सस्वर वाचन व मौन वाचन में अन्तर

d. वाचन शिक्षण की विधियाँ

e. वाचन के लिए ध्यान देने योग्य बातें

f. उच्चारण के भेद

3. लिखित अभिव्यक्ति क्षमता का विकास

a. लेखन कौशल

b. लेखन शिक्षण की आवश्यकता

c. लेखन कौशल का महत्व

d. लेखन शिक्षण का समय

e. हिन्दी भाषा की लिखित शिक्षा

f. लिखित अभिव्यक्ति की शिक्षण विधियाँ

g. शुद्ध लेखन तत्व

By. Dr. Asha Kumari Gupta

Scanned with CamScanner

मौखिक अभिव्यक्ति की आवश्यकता

(1) मौखिक अभिव्यक्ति से बालक में सुरक्षा की भावना का विकास करना तथा परिवार व समाज में बालक के स्नेह, स्वीकृति, विश्वास, प्रशंसा तथा पुरस्कार के द्वारा सुरक्षा की भावना देते हैं।

(2) नये अनुभवों की प्राप्ति हेतु मौखिक अभिव्यक्ति महत्वपूर्ण है।

(3) वाक्पटुता तथा शुद्ध उच्चारण हेतु मौखिक अभिव्यक्ति उपयोगी है।

(4) विरोध प्रदर्शन हेतु भी मौखिक अभिव्यक्ति श्रेष्ठ माध्यम है।

(5) आत्म प्रदर्शन के लिए मौखिक अभिव्यक्ति अच्छे अवसर प्रदान करती है।

(6) मौखिक अभिव्यक्ति आज्ञाकारिता के विकास के लिए अति आवश्यक है।

(7) सामूहिक विकास भी इसी के माध्यम से सम्भव है तथा जीवन की विभिन्न आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए मौखिक अभिव्यक्ति महत्वपूर्ण है।

(8) मानसिक स्वास्थ्य को मौखिक अभिव्यक्ति ही ठीक रहती है।

मौखिक भाव प्रकाशन (बोलना)—मौखिक भाव प्रकाशन अर्थात् बोलने की शिक्षा देते समय निम्न बातों पर अवश्य ध्यान देना चाहिये—

(1) बालक को शैशवावस्था से ही बोलने की शिक्षा देना प्रारम्भ कर देना चाहिये।

(2) प्रारम्भिक अवस्था में बालक के उच्चारण व भाषा की अशुद्धता पर विशेष ध्यान न देकर धारा प्रवाह के साथ आत्मिक प्रकाशन करने की योग्यता के विकास पर बल दिया जाय।

(3) बालक को बोलने के अधिकाधिक अवसर प्रदान किये जाएँ। जान-बूझकर ऐसी परिस्थितियाँ पैदा न करें जिसमें बालकों को बोलने के अवसर अधिक प्राप्त हो।

(4) भाषा सदैव क्षेत्रवाद, प्रान्तीयता तथा व्याकरण आदि के दोषों से मुक्त होनी चाहिये।

(5) बालक ज्यों-ज्यों बड़ा होता जाय तो उसके मौखिक भाव प्रकाशन में अशुद्धता तथा उच्चारण को ठीक करते हुए चलना चाहिये।

Scanned with CamScanner

(6) बालक में संकोच की भावना को विकसित न होने दें।

(7) बालक शीघ्रता से बोलने के कारण शब्दों को चबा-चबाकर या दबा-दबाकर न बोले। इसके साथ ही शिक्षक का व्यवहार स्नेहपूर्ण तथा विश्वासपूर्ण होना चाहिये।

(8) बालकों के लिए भाषण, आशु भाषण, प्रतियोगिताएँ तथा संवाद, नाटक, कहानी-कथन, वाद-विवाद जैसे कार्यक्रमों का आयोजन समय-समय पर किया जाना चाहिये।

(9) बालकों के सम्मुख ऐसा वातावरण बनाया जाय जिसमें बालकों के सम्मुख ऐसा वातावरण बनाया जाय जिसमें बालक स्वच्छन्द रूप से अपनी बात कह सके।

बोलने के अपेक्षित व्यवहारगत परिवर्तन—बोलने के कौशलात्मक उद्देश्य एवं अपेक्षित व्यवहारगत परिवर्तन निम्नलिखित हैं—

(1) बालक शुद्ध उच्चारण, उचित स्वराघात तथा स्वरों के उचित उतार-चढ़ाव में कर सकेगा।

(2) वह अपने मनोभावों को उचित गति के साथ मौखिक रूप से व्यक्त कर सकेगा।

(3) वह प्रसंगानुसार मुहावरों, कहावतों, उक्तियों की पहचान कर सकेगा।

(4) बालक शब्दों, वाक्यों को उचित क्रम व अर्थ के अनुसार व्यक्त कर सकेगा।

(5) बालक मौखिक अभिव्यक्ति में विचारों की क्रमबद्धता, सुसम्बद्धता बनाये रख सकेगा।

(6) बालक उचित हाव-भाव व भंगिमा के साथ बोल सकेगा।

(7) आवश्यकता पड़ने पर बालक अपनी बात की पुनरावृत्ति भी कर सकेगा।

(8) बालक मौखिक अभिव्यक्ति में आवश्यक शिष्टाचार का पालन कर सकेगा।

(9) महत्वपूर्ण अपेक्षित परिवर्तन होगा कि बालक प्रसंगानुसार अपनी मौखिक अभिव्यक्ति की शैली का प्रयोग कर सकेगा।

आदर्श वार्तालाप की विशेषताएँ—जब बालक आपस में कक्षा में आपस में वार्तालाप करे तो उनमें किस प्रकार की विशेषताएँ होनी चाहिये ?

(1) बोधगम्य भाषा का प्रयोग—आदर्श वार्तालाप के लिए आवश्यक है कि भाषा का प्रयोग बोधगम्य हो तथा भाषा शुद्ध हो। जिस प्रकार ग्रामीण परिवेश के व्यक्तियों से क्लिष्ट भाषा में वार्तालाप अनुचित है। वार्तालाप श्रोता के स्तरानुकूल ही होना चाहिये।

(2) स्पष्टता—वार्तालाप स्पष्ट होनी चाहिये। जो बात कही जा रही है पहेली रूप या घुमा-फिराकर न कही जाय। किसी भी प्रश्न का उत्तर गोल-माल या अस्पष्ट रूप में नहीं दिये जाएँ।

(3) भाषा की मधुरता—आदर्श वार्तालाप की सबसे बड़ी प्रमुख विशेषता है कि भाषा की प्रमुखता होनी चाहिये। भाषा की मधुरता में एक आकर्षण शक्ति होती है। किसी भी कड़वी बात को यदि मधुरता व समरसता के ढंग से आकर्षक बनाकर कह सकते हैं। **तुलसीदास** जी ने कहा है—

तुलसी मीठे वचन से, सुख उपजत चहु ओर।
वसी करन इक मन्त्र है, तजि दे वचन कठोर॥

(4) सर्वमान्य भाषा का प्रयोग—वार्तालाप में सर्वमान्य भाषा का ही प्रयोग किया जाना चाहिये। कई बार व्यक्ति अपनी शान को व्यक्त करने के लिए शब्दों को तोड़-मरोड़कर पेश करते हैं। अप्रचलित भाषा वार्तालाप को नीरस बना देती है।

Scanned with CamScanner

(5) प्रभावोत्पादकता—वार्तालाप की सफलता का श्रेय उसकी प्रभावोत्पादकता में ही है। जनता के हृदय पर वे ही व्यक्ति अपना प्रभाव जमा पाते हैं जो अपनी बात (भाषण) को बड़े प्रभावशाली तरीके से प्रस्तुत करते हैं। प्रभावशाली विचारों में कही गयी बात पर विरोध रखने वाले व्यक्ति भी उनकी ओर आकर्षित हो जाते हैं।

(6) भाषा अवसरानुकूल हो—प्रत्येक व्यक्ति भाषा का प्रयोग अवसरानुकूल करे। जैसे दुःखद वातावरण में करुणामयी शब्दों का प्रयोग तथा खुशी के समय, यथा—पुत्र जन्मोत्सव या विवाहोत्सव के अवसर पर उल्लासमयी शब्दों का प्रयोग किया जाय।

(7) गतिशीलता—वार्तालाप का प्रमुख गुण गतिशीलता भी है—**भाई योगेन्द्रजीत** के शब्दों में, "हमारा बोलचाल तथा विचार दूसरों के लिए बोधगम्य हो, इसके लिए आवश्यक है कि हमारी भाषा में उचित गति तथा प्रवाह होना चाहिये। यहाँ गति व प्रवाह से तात्पर्य है कि बोलते समय हम एक ही साँस में सारी बात न कह दें। ऐसा करने पर हमारी बातचीत की ओर कोई भी ध्यान नहीं देगा। बोलते समय हम विराम चिह्नों का पूरा-पूरा प्रयोग करते चलें।" अर्थात् शिक्षक इस ओर बालकों को शिक्षा दें कि विराम चिह्नों पर रुकना चाहिये। यथास्थान धीमे, तीव्र शब्दों का प्रयोग करना चाहिये।

(8) स्वाभाविकता—वार्तालाप में स्वाभाविकता होनी चाहिये। बातचीत में बनावटीपन शब्दों का प्रयोग बड़ा ही हास्यास्पद लगता है, इसी के साथ किसी बात को कृत्रिम शब्दों से लम्बी न बनायें। जिस प्रकार एक मित्र कुछ दिनों बाद अपने दूसरे मित्र से मिलता है तो दूसरा मित्र कहता है—"प्रिय मित्र ! इतने दिन तुम कहाँ थे ? मैं तुम्हारे वियोग में सूख-सूखकर काँटा हुआ जा रहा हूँ, जिस प्रकार बिना पानी के मछली तड़पती है उसी प्रकार मैं भी तुम्हारे बिना तड़पता जा रहा हूँ।"

इस प्रकार उक्त कथन पूर्णतः बनावटीपन लिए हुए है अतः हमारा कथन स्वाभाविकता पूर्ण ही होना चाहिये।

(9) शिष्टाचार—मौखिक भाषा में शिष्टाचार का भी ध्यान रखना अति आवश्यक होता है। बालकों को शिक्षा दे कि अपनों से बड़ों से किस प्रकार शिष्टता से वार्तालाप करे तथा अपनों से छोटों से किस प्रकार बात करनी चाहिये।

(10) उच्चारण की शुद्धता तथा स्पष्टता—मौखिक वार्तालाप में शुद्ध उच्चारण का अवश्य ध्यान रखा जाना चाहिये। अध्यापक को चाहिये कि वह स्वयं स्पष्ट और शुद्ध शब्दों का उच्चारण करें तथा साथ ही बालकों को स्वयं शुद्ध, स्पष्ट उच्चारण के लिए प्रेरित करे। अशुद्ध उच्चारणयुक्त वार्तालाप भद्दा तथा गतिहीन लगता है।

Scanned with CamScanner